पर्व-त्योहारों का सिद्धान्त - मैथिल उत्सवों के सन्दर्भ में

प्रो. वैद्यनाथ सरस्वती

अदृश्य शक्ति में विश्वास एक विश्वास है। प्रत्यक्षवादी विज्ञान, भौतिक उन्नति एवं शहरीकरण से यह विश्वास अप्रभावित है, सूर्य की तरह अपरिहार्य है। इसका माप-दण्ड है पर्व त्योहार जो सामूहिक रूप से निर्धारित तिथियों में वर्ष भर मनाया जाता है। पर्व-त्योहार प्रकृति है। वर्षा ऋतु का आभास होते ही मोर नाचने लगता है, वसंत ऋतु में कोयल की मीठी आवाज गूँजने लगती है। यह सब प्रकृति का उद्‌गार है। पशु-पक्षी, मनुष्य और गन्धर्व सभी प्रकृति के अंग हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से सृष्टि का निर्माण होता है। विधाता का यही विधान है। यही ईश्वर की कला है। प्राणियों की यात्रा का प्रारम्भ और अन्त रहस्यमय है। सूर्य, चन्द्र और तारे भी रहस्यमय हैं। इस रहस्य को प्राचीन मनीषियों ने प्रतीकों के द्वारा समझने का प्रयास किया था। **ऋग्वेद** में सृष्टि की रचना का आख्यान हैं। विराट् पुरुष के अंगों से सभी जीव-जन्तु, पृथ्वी-आकाश और काल का प्रारम्भ है। पुरुष और प्रकृति के संयोग से सभी प्राणी एवं उनके मन, बुद्धि, प्राण और ऐन्द्रिक शक्तियाँ व्याप्त हैं। यह सहज भाव से कहा जा सकता है कि इन शक्तियों का भी कोई शक्तिमान् है जो दृश्य भी है और अदृश्य भी। जब मनुष्य का उससे संवाद होता है तो उसे पर्व-त्योहार कहते हैं। पशु-पक्षी भी उस शक्तिमान् से बँधे हुए हैं, उनका भी अदृश्य शक्ति से संवाद होता है। इस लीला को समझना हमारा उद्देश्य है। इसी से पर्व-त्योहारों का सिद्धान्त बनता है।

संरचना

सभी संस्कृतियों में आनन्द का नैसर्गिक बीज है। मनुष्यों में आनन्दित होने की अपनी-अपनी शैली है। इसके आधार पर ही संस्कृतियों की पहचान बनती है। काशी (प्रकाश) आनन्द की नगरी है। इसके अनेक नामों में एक नाम है "आनन्दवन"। विश्वनाथ की यह नगरी सभी धार्मिक अनुष्ठानों को अनुमोदित करती है। आनन्द का अवसर देती है। प्रस्तुत निबन्ध में काशीवासी मैथिल सम्प्रदाय के पर्व-त्योहारों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मैथिल सम्प्रदाय की पहचान राजा निमि के यज्ञ से प्रारम्भ होती है। निमि के शरीर का मंथन एक विशेष अनुष्ठान था। इसी से मिथिला और मैथिल नाम प्रचलित हुआ। राजा जनक और माता जानकी से मैथिलों की पहचान का विस्तार हुआ। काशीवासी मैथिलों की अपनी एक अलग पहचान है। पहचान है संस्कृत विद्या एवं कर्मकाण्ड से। अपने परम्परागत अनुष्ठानों के अतिरिक्त वे स्थानीय पर्व-त्योहारों में विशेषकर मंदिरों से सम्बन्धित उत्सवों में, विशेष रूप से भाग लेते हैं।

मैथिलों में अड़तीस प्रकार के त्योहारों का विधान है। (परिशिष्ट-1) त्योहारों का अनुक्रम प्रारम्भ होता है श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी से। उस दिन सर्प की माता विषहरा (मनसा देवी) का जन्मोत्सव मनाया जाता है। श्रावण शुक्ल पक्ष में मधुश्रावणी का त्योहार आता है, जो विशेषकर नवविवाहिता स्त्रियों के लिए अनिवार्य है। इस दिन गौरी-शंकर की पूजा होती है और तेरह दिन तक स्त्रियाँ कथा सुनती रहती हैं। कथा प्रारम्भ होता है विषहरा (सर्प) के जन्म एवं राजा श्रीकर से। इस सन्दर्भ में पच्चीस कथाओं का पारायण होता है। बारह और ऐसे पर्व हैं जिसमें कथा सुनने का विधान अनिवार्य है। प्रत्येक पर्व के अपने-अपने सन्दर्भ हैं, विधान हैं और फला-फल के विश्वास हैं। मैथिलों के अधिकांश पर्व स्त्रियों से सम्बन्धित हैं। कुछ ऐसे भी पर्व हैं जो सिर्फ पुरुषों के लिए अनिवार्य हैं। जैसे पितरों का तर्पण और अनन्त भगवान् की पूजा। भ्रातृद्वितीया भाई-बहन का त्योहार है। कुछ नियतकालिक पर्व भी हैं-जैसे सूर्य का डोरा-जिसे स्त्रियाँ एक वर्ष, तीन वर्ष अथवा पाँच वर्ष तक मनाती हैं।

नवविवाहित स्त्रियाँ एक वर्ष तक पृथ्वी की पूजा करती है, तत्पश्चात् संक्रान्ति के दिन इसके समापन का विधान है। कुँवारी कन्याएँ आठ वर्ष की अवस्था से तुसारी-पूजा प्रारम्भ करती हैं और विवाह के एक वर्ष बाद इस अनुष्ठान का समापन। इसी प्रकार स्त्रियों का हरिसों पर्व भी समय-बद्ध है। विवाहोपरान्त कुँवारी कन्याएँ वर्ष भर अनुष्ठान करने के बाद इस पर्व का समापन करती हैं। कुछ ऐसे भी पर्व हैं जो संख्यापद (न्यूमरल) से अनुशासित होते हैं; जैसे-माघी सप्तमी के दिन सूर्योदय से पूर्व जलाशय में तिल लेकर स्नान करना। इसमें सात बेर का पत्ता, सात जव का पत्ता, सात चिर-चिरी का पत्ता और सात आम का पत्ता सिर पर रखकर सात बार जल में डुबकी लगाना और सूर्य के सत्तर नामों के जप करने का विधान है। कुछ ऐसे भी पर्व हैं जो प्रागऐतिहासिक घटनाओं से सम्बद्ध हैं; जैसे रामनवमी (चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी) जो श्री रामचन्द्र के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। जन्माष्टमी (भादो कृष्ण पक्ष की अष्टमी) श्री कृष्ण के जन्मोत्सव का पर्व है। देवोत्थान एकादशी (कार्तिक शुक्ल पक्ष) श्री विष्णु भगवान् से सम्बन्धित है। इस दिन भगवान् क्षीर सागर में चिर निद्रा के पश्चात् जागृत हुए थे। इस पर्व को देवोत्थान एकादशी के रूप में मनाया जाता है।

मैथिल पर्व त्योहारों के पाँच अंग हैं-(1) व्रत (उपवास), (2) कथा, (3) पूजन, (4) गायन और (5) अरिपन (चित्रकला)। त्योहार दो प्रकार के हैं-एक शास्त्राचार और दूसरा लोकाचार। लोकाचार में स्थानीय एवं जातियों के आधार पर त्योहारों की विविधता है। पर्व त्योहार के सुनिश्चित तिथियों का निर्धारण पञ्चाङ्ग से होता है। पञ्चाङ्ग ज्योतिष शास्त्र का एक उपांग है। इसके द्वारा ही पर्व त्योहारों के दिन और समय सुनिश्चित होते हैं। ज्योतिष सभी हिन्दुओं के पर्व-त्योहारों का प्रामाणिक शास्त्र है। नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर उत्तर और दक्षिण की परम्परा में कुछ-कुछ भिन्नता है, फिर भी हिन्दुओं के पर्व त्योहार की अभीप्सा एक है।

सिद्धान्त

पर्व त्योहारों के अध्ययन से कई बातें सामने आती हैं। सर्वप्रथम इतना तो स्पष्ट है कि यह अलौकिक और लौकिक, दैविक और ऐहिक (सेक्रेड और सेकुलर) के समन्वय का प्राचीन विधान है, जो सभी सनातन हिन्दुओं के लिए मान्य है। भारत और भारत के बाहर प्राचीन लोगों में पर्व त्योहार बहुधा आनन्द और अध्यात्म से जुड़ा हुआ है। सेमेटिक धर्मों (ईसाई और इस्लाम) में इस तरह का समन्वय अमान्य है। अतः उनमें उल्लासप्रद त्योहारों के लिए कोई स्थान नहीं है। उनकी दृष्टि में ऐसा करना ईश्वरीय विधान का अतिक्रमण (ट्रांसग्रेसन) है। मैथिलों के पर्व त्योहार से जो सिद्धान्त बनता है वह संक्षेप में इस प्रकार है :

पर्व त्योहार सामान्य दिनों की एकस्वरता (मोनोटोनी) को दूर करता है। सभी स्तर के लोगों को नये जीवन का बोध कराता है। आनन्द-प्रदान करता है। नया परिवेश बनाता है। पर्व-त्योहार उत्तम भोजन, नृत्य एवं संगीत के आनन्ददायक अनुभव का अवसर देता है। ईश्वरीय विधान का आभास कराता है। सामान्य लोगों के लिए यह आनन्द का दुर्लभ दिन होता है। ऐसा कहा जा सकता है कि जिस समाज में जितना अधिक पर्व त्योहार मनाया जाता है, वह उतना ही अधिक सुव्यवस्थित है।

पर्व-त्योहार ऊर्जा पैदा करने का स्रोत है। इसके विधान एवं विश्वासों से ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रह्माण्ड (कासमस) की सार्वभौमिक व्यवस्था एवं प्रकृति में ऋतुओं के समन्वय की नैसर्गिक व्यवस्था से पर्व-त्योहार अनुशासित होता है। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के अवसर पर पूजा-व्रत, स्नान-दान एवं पुण्य कार्य करने का शास्त्रीय विधान है। ऐसे अवसरों पर शक्तिमान् के स्मरण से मनुष्य को अपनी बाल्यावस्था का बोध होता है, लोगों का मनोबल बढ़ता है, सुखद अनुभव होता है। सामान्य दिनों के जीवन की एकस्वरता (मोनोटोनी) दूर होती है। कुछ ऐसी भी जातियाँ हैं जो अपने

को सूर्यवंशी एवं चन्द्रवंशी कहते हैं। इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करने से उनका मनोबल बढ़ता है। कुछ ऐसे पर्व हैं जिसमें लोग अपने-अपने परिजनों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पर्व-त्योहार कलात्मक प्रतिभा प्रदान करते हैं। मैथिलों में अरिपन (चावल के घोल) से चित्र बनाने का व्यापक विधान है। इसमें चक्राकार (सर्कुलर) चित्रों से समस्त ब्रह्माण्ड की सांकेतिक प्रस्तुति होती है। एक वृत्त के अन्दर सात वृत्तों का चित्र बनाया जाता है, जो सौर एवं ब्रह्माण्ड की प्रतीकात्मक उपस्थिति का बोध कराता है। पर्व-त्योहार के गीतों से जीव-जन्तुओं के प्रकट होने का रहस्य स्पष्ट होता है। इसके स्पन्दन से पृथ्वी और सभी प्राणियों में नयी स्फूर्ति आती है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्व-त्योहार कोई तमाशा नहीं, वरन् पृथ्वी, मानवता और समस्त ब्रह्माण्ड को जोड़ने का एक विधान है।

कालबोध

पर्व-त्योहारों को समझने के लिए काल के स्वरूप का बोध होना आवश्यक है। शास्त्रकारों ने चार युगों का वर्णन किया है। भविष्यपुराण में कलियुग (आधुनिक युग) के लोगों के आचार-विचार एवं उससे उत्पन्न दुष्परिणामों का विशद विवरण है। इससे भिन्न है आधुनिक पुराण (स्क्रिपचर आफ माडर्निटी) जो आधुनिकतावाद को गौरवान्वित करता है। इसके दुष्प्रभाव से विश्वनाथ की प्रकाशमयी (काशी) अंधकारमयी नगरी के रूप में परिवर्तित हो रही है। संक्षेप में कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना प्रासंगिक होगा।

काशी (वाराणसी, बनारस) के कुछ अपने विशेषक (डायक्रिटिक मार्क) हैं। इसके चार स्वत: परिभाषित स्वरूप हैं–(1) भोग और मोक्ष की नगरी, (2) अनेकत्व की नगरी, (3) प्राचुर्य एवं दरिद्रता की नगरी, और (4) दो धर्मों और तीन संस्कृतियों की नगरी। इन विशेषकों से विभूषित काशी-वाराणसी पर्व-त्योहारों की एक विशेष नगरी है। यहाँ असंख्य देवी-देवताओं और नागरिकों के बीच परस्पर संवाद बना रहता है। फिर भी यह तीर्थ नगर कलिकाल से ग्रसित है। ईश्वर और जीव के मध्य पाप अन्तराल है। पाप के नष्ट होने का अन्तर्निहित अर्थ है सृष्टि का संहार। परन्तु संहार का यह कार्य ईश्वर मनुष्य के सहयोग से ही करता है। जैसा कहा गया है– "जड़-चेतन-गुण-दोषमय विश्व कीन्ह करतार।" भौतिकता और आधुनिकता ने पर्व-त्योहारों की नयी व्याख्या की है, जिसमें ईश्वरीय विधान दूरतम छोर पर है। आज स्वयं भगवान् विश्वनाथ पुलिस के घेरे में रहते हैं। पापनाशिनी गंगा प्रदूषित घोषित कर दी गयी हैं। तीर्थयात्रियों के लिए काशी में अब धर्मशाला नहीं बनती। सितारों वाले होटल पर्यटकों के लिये हैं। आज काशी में तीर्थयात्री कम और विदेशी पर्यटक ज्यादा मात्रा में आते हैं। उनका उद्देश्य है धर्म और संस्कृति की लड़खड़ाती दुनिया का अध्ययन करना। इसी प्रकार व्यापारी आते हैं व्यापार करने और नेता आते हैं लोकप्रिय बनने। काशी के शहरीकरण की प्रक्रिया में आज बहुमंजिले मकान की धूम मची है। यहाँ रईसों की बहरी अलंग अब बहुत दूर की कल्पना है। सड़कों पर पैदल चलना अब असम्भव सा लगता है। बनारस के इक्केवाले और गहरेबाज अब दूर-दराज तक दिखाई नहीं पड़ते। पक्के और कच्चे महाल का कोई अन्तर नहीं रहा। रईस और व्यापारी की पहचान मिट गयी। काशी की गंगा अब पतित-पावनी गंगा नहीं रह गयी, शहर की गंदगी को ढोने की प्रणाली हो चली है। शहर को विकसित करने की प्रक्रिया सारे संसार में एक सी है। तीर्थों को विकसित करने का मन इससे सर्वथा भिन्न है।

निष्कर्ष

काशी के पर्व-त्योहार दो प्रकार के हैं–एक है सम्प्रदायगत और दूसरा लोकगत, जो बनारसी संस्कृति की आत्मा है। इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। काशी के मैथिल पर्व-त्योहारों का मुझे जितना अनुभव है उसके आधार पर संक्षेप में यह कह सकते हैं कि इनमें दो प्रवृत्तियाँ दृश्यगत हैं–एक शास्त्रनिष्ठ व्यवहार

और दूसरा लोकनिष्ठ व्यवहार। आज शास्त्रनिष्ठ व्यवहार सिमटता जाता है, लोकनिष्ठ व्यवहार स्त्रियों के मनोबल पर स्थिर है। ईश्वरीयमन और लोकमन में सामंजस्य का अभाव दिखता है। मनुष्य और ईश्वर के बीच वस्तुओं की नहीं मन की दूरी है। पर्व-त्योहार आनन्द और प्रकाश के मध्य में है। ईश्वर में विश्वास का अर्थ है सम्पूर्ण विश्वास जिससे जीव और जगत् में सर्वाधिक सामंजस्य स्थापित होता है। यही शाश्वत सिद्धान्त है।

आधार ग्रन्थ

- श्रीमती मोहिनी झा (लेखिका), डॉ. योगानन्द झा (सम्पादक), *मिथिलक पावनि तिहार,* पटना : उर्वशी प्रकाशन, 1991
- Baidyanath Saraswati, *Kashi: Myth and Reality of a Classical Cultural Tradition* : Simla : Indian Institute of Advanced Study, 1975.
- *Brahmanic Ritual Traditions,* Simla : Indian Institute of Advanced Study, 1977.
- Ritual Language : A transanthropological Perspective. *Man in India.* 62 (1), 1982.
- *Ritual in Relation to Social Life and the Life cycle of Individuals in Maithil Indian Society,* UNESCO Report, 1985.

परिशिष्ट

काशी के मैथिलों में पर्व-त्योहार

क्र.सं.	नाम	तिथि	संक्षिप्त विवरण
1.	मौनापंचमी	श्रावण कृष्ण पक्ष	सर्प की माता विषहरा (मनसा देवी) का जन्मोत्सव। नव-विवाहिता स्त्रियाँ अपने सौभाग्य की रक्षा के लिये गौरी-शंकर और सर्प की पूजा करती हैं।
2.	मधुश्रावणी	श्रावण कृष्ण पक्ष (मौनापंचमी से शुक्लपक्ष तृतीया)	सधवा स्त्री, मुख्यतः नवविवाहिता, अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए गौरी शंकर की पूजा करती हैं। इस अवसर पर कथाएँ सुनती हैं– विशेषकर विषहरा (सर्प) के जन्म की कथा, शिव की मानस पुत्री विहुला की कथा, मंगला गौरी की कथा, पृथ्वी के जन्म की कथा, समुद्र मंथन की कथा, सती की कथा, पतिव्रता की कथा, महादेव के परिवार की कथा, गंगा की कथा, गौरी के जन्म की कथा, कामदहन की कथा, मेनका का मोह, कार्तिकेय का जन्म, गणेश का जन्म, गौरी की अनेक कथायें, संध्या का विवाह और लीली का जन्म एवं विवाह, पतिव्रता सुकन्या की कथा, बाल-वसंत की कथा, गोसाउन की कथा, चनाइ और वैरसा, गोसाउन के देह फटने की कथा, राजा श्रीकर की कथा, आदि।
3.	झूलन	श्रावण शुक्ल पक्ष पुत्रदा एकादशी से सलोनी पूर्णिमा तक	झूलन, श्रीकृष्ण की बालक्रीड़ा की कथा।
4.	राखी	श्रावणी पूर्णिमा	आयु-आरोग्य के लिए रक्षा बंधन।

5.	जन्माष्टमी	भादो कृष्णपक्ष	कृष्ण के जन्म एवं उनकी लीला की कथाएँ।
6.	हरितालिका	भादो शुक्ल तृतीया	कुँवारी कन्या मनोवांछित वर के लिए व्रत रखती हैं और हरितालिका की कथा सुनती हैं।
7.	चौठचन्द्र	भादो शुक्ल चौथ	सायंकाल स्त्री और पुरुष गणपत्यादि अथवा गौरी की पंचोपचार पूजा करते हैं। चन्द्रमा की कथा सुनते हैं।
8.	अनन्त पूजा	भादो शुक्ल चतुर्दशी	अनन्त भगवान् की पूजा और कथा।
9.	पितरपक्ष, मातृनवमी	आश्विन कृष्ण पक्ष के पड़ीवा से प्रारम्भ 15 दिन तक	पितरों का तर्पण, पूजन, ब्राह्मण भोजन
10.	जीवत्पुत्रिका	आश्विन कृष्ण पक्ष अष्टमी से प्रदोष काल तक	व्रत एवं कथा। स्त्रियों का संतान और सौभाग्य बढ़ता है।
11.	शारदीय नवरात्र	आश्विन शुक्ल पक्ष पड़ीव से प्रारम्भ	दुर्गा देवी की पूजा, कीर्तन, हवन, कलस-स्थापन, जयन्ती, पूजा-पाठ।
12.	कोजाग्रा एवं लक्ष्मी पूजा	विजयादशमी के चौथे अथवा पाँचवे दिन शरद पूर्णिमा	संध्याकाल लक्ष्मी की पूजा।
13.	गवहा संक्रान्ति	कार्तिक में तुला राशि के संक्रान्ति	स्त्रियाँ लक्ष्मी का आवाहन करती हैं। कुँवारी कन्या अपने भावी जीवन की मंगल कामना करती हैं।
14.	सुखरात्रि (दीपावली)	कार्तिक अमावस्या की रात्रि	संध्याकाल में दीप जलाना, लक्ष्मी और काली की पूजा।
15.	गोवर्धन पूजा	कार्तिक शुक्ल पड़ीव	पुत्र-स्त्री-सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि के लिये।
16.	हरिसों	कार्तिक अमावस्या के प्रातः काल	कुँवारी कन्या विवाहोपरान्त सालभर अनुष्ठान करने के बाद इसे विधिवत् सम्पूर्ण करती हैं। व्रत कथा सुनती हैं।
17.	भ्रातृद्वितीया	कार्तिक शुक्ल द्वितीया	भाई-बहन का त्योहार। इस अवसर पर भाई बहन के घर जाता है। ऐसी कथा है कि इस दिन यमुना (नदी) ने अपने भाई यम (मृत्यु के देवता) को बहुत स्नेह एवं सत्कार से भोजन कराया था।
18.	छठि व्रत	कार्तिक शुक्ल षष्ठी-सप्तमी	भगवान् सूर्य उपासकों को रोग मुक्त करते हैं। पुत्र हीनों को पुत्र, स्त्री को सौभाग्य और सकल मनोरथ पूरा करते हैं। कथा सुनना अनिवार्य है।
19.	देवोत्थान एकादशी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	श्री विष्णु भगवान् क्षीरसागर में सोने के पश्चात् इसी दिन जाग्रत हुये थे।
20.	सामा	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया से कार्तिक पूर्णिमा तक	मिथिला का अत्यन्त मनोरंजक पर्व। स्त्रियाँ अपने भाई और पति के दीर्घायु होने की कामना करती हैं। गीत गाती हैं।
21.	कार्तिक कृत्य	कार्तिक संक्रान्ति	मिथिला में कार्तिक महीने का बहुत माहात्म्य है। संक्रान्ति से प्रातः काल स्नान प्रारम्भ हो जाता है। आँवले के वृक्ष के नीचे ब्राह्मण भोजन कराया जाता है। श्री विष्णु को प्रसन्न करने के लिए आकाश दीप जलाया जाता है।

22.	नवान्न	अग्रहायण महीने में शनि और मंगल छोड़कर किसी दिन	गोसाउन (गृह देवी) की पूजा और नया अन्न ग्रहण करना।
23.	सूर्य का डोरा	अग्रहायण शुक्ल पक्ष में रविवार से प्रारम्भ कर वैशाख शुक्ल पक्ष तक	स्त्रियाँ एक वर्ष, तीन वर्ष अथवा पाँच वर्ष तक यह पर्व मनाती हैं। धन, पुत्र और आरोग्य की कामना करती हैं।
24.	तिल संक्रान्ति	माघ महीने में मकर संक्रान्ति के दिन	नित्य प्रातः स्नान और दान करने का विशेष फल।
25.	पृथ्वी पूजा	तिल संक्रान्ति के दिन	स्त्रियों के विवाह वर्ष में यह पर्व मनाया जाता है। एक वर्ष पूजा करने के बाद संक्रान्ति के दिन समापन।
26.	तुसारी	तिल संक्रान्ति से आरम्भ अगला संक्रान्ति तक	कुँवारी कन्याओं का पर्व। आठ-नव वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ और विवाह के एक वर्ष बाद समापन।
27.	साँझ	विवाह के एक वर्ष तक	नित्य संध्या समय देवी की पूजा।
28.	नरक निवारण	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	नरक से बचने और मोक्ष प्राप्त करने के उद्देश्य से व्रत।
29.	वसंत पंचमी	माघ शुक्ल पक्ष पंचमी	वाणी की अधिष्ठात्री सरस्वती देवी की पूजा।
30.	माघी सप्तमी	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी	सूर्योदय से पूर्व जलाशय में स्नान करना। गंगा (नदी) में तिल लेकर स्नान करना। सात बेर का पत्ता, सात जव का पत्ता, सात चिरचिरी का पत्ता और सात आम का पत्ता सिर पर रखकर स्नान करना, सात बार जल में डुबकी लगाना और सूर्य के सत्तर नामों का जप करना।
31.	शिवरात्रि	फाल्गुन चतुर्दशी	शिव को प्रसन्न करने एवं संकट से रक्षा के लिए इस दिन नमक नहीं खाना। शिव की कथा सुनना।
32.	फगुआ (होली)	फाल्गुनी पूर्णिमा	होलिका दहन। प्रातः आमोद-प्रमोद, रंग-अबीर खेलना।
33.	सप्ताडोरा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष पड़ीव से प्रारम्भ और वैशाख शुक्ल पक्ष के अन्तिम रविवार को समाप्त	सामान्यतः स्त्रियाँ व्रत रखती हैं, पूजा करती हैं और कथा सुनती हैं। अंतिम रविवार को पूजा और विसर्जन के पश्चात् सप्तामाई की कथा सुनना अनिवार्य है।
34.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी	भगवान् रामचन्द्र का जन्मोत्सव, उल्लास के साथ।
35.	जूड़शीतल (सलआइन)	वैशाख मेष संक्रान्ति	जूड़शीतल की पूजा, स्नान, सत्तू खाना, शिकार खेलना।
36.	बड़सइत (वट सावित्री)	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या	सुहागिन बने रहने का त्योहार, वट वक्ष की पूजा, पूजा में आम, लीची, केला, मिष्ठान, मखाना, पान-सुपारी, वट सावित्री कथा।
37.	सोमवारी व्रत	जब सोमवार को अमावस्या हो	संतान के चिरायु होने के लिए कथा सुनना और व्रत रखना।
38.	षष्ठी की पूजा या "प्रथम बालक"	कन्या के प्रथम ऋतुस्राव	मनोवांछित पुत्र होने की कामना से।